Journal Homepage: www.ijarpr.com ISSN: 3049-0103 (Online)

International Journal of Advance Research Publication and Reviews

Vol 02, Issue 05, pp 492-495, May 2025

पर्यावरण और सतत विकास के लिए मूल्य आधारित शिक्षा

डॉ दीपक जैन

सहायक प्रोफेसर अध्यापक शिक्षा विभाग डी. जे कॉलेज बड़ौत (बागपत) उ.प्र

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17173857

सारांश

वर्तमान समय में पर्यावरणीय संकट, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन और पारिस्थितिक असंतुलन एक वैश्विक चुनौती बन चुके हैं। सतत विकास की अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि विकास केवल वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसमें भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधनों का संरक्षण भी आवश्यक है। इस दृष्टिकोण से शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षा न केवल ज्ञान देती है बल्कि जीवन–मूल्यों को भी स्थापित करती है।मूल्य आधारित शिक्षा व्यक्ति में प्रकृति–प्रेम, सहयोग, संतुलन, अनुशासन और उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास करती है। भारतीय संस्कृति में "प्रकृति" को माता और "पृथ्वी" को देवी का स्थान दिया गया है। वेदों और उपनिषदों में पर्यावरण के संरक्षण के स्पष्ट निर्देश मिलते हैं। आज आवश्यकता है कि इन्हीं मूल्यों को शिक्षा प्रणाली का अंग बनाया जाए ताकि विद्यार्थी केवल तकनीकी दक्षता न प्राप्त करें, बल्कि पर्यावरणीय चेतना और सतत विकास के लिए उत्तरदायी नागरिक बनें।

परिचय

शिक्षा केवल पाठ्यक्रम या परीक्षाओं तक सीमित नहीं है। इसका वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करना है। यदि शिक्षा में नैतिकता, मानवीयता और पर्यावरणीय चेतना न हो तो वह अधूरी मानी जाती है। आज जब प्रदूषण, वनों की कटाई, जल संकट और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएँ तीव्र होती जा रही हैं, तब यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षा प्रणाली में पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के मूल्य समाहित किए जाएँ। भारतीय परम्परा में प्रकृति और मनुष्य के बीच गहरे सामंजस्य पर बल दिया गया है। ऋग्वेद के मंत्र "माता भूमिरू पुत्रोऽहम् पृथिव्यारू" से यह स्पष्ट होता है कि पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं। इस संबंध को समझे बिना सतत विकास की कोई भी कल्पना अधूरी है। नई शिक्षा नीति 2020 ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि शिक्षा केवल रोजगारपरक नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह सामाजिक उत्तरदायित्व और पर्यावरणीय चेतना को भी विकसित करे। मूल्य आधारित शिक्षा इसी दिशा में एक ठोस कदम है। इसमें न केवल सैद्धांतिक ज्ञान दिया जाता है बल्कि विद्यार्थियों को व्यवहारिक रूप से प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाया जाता है।आज वैश्विक स्तर पर भी "एजुकेशन फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट" की अवधारणा तेजी से विकसित हो रही है। इसका उद्देश्य है कि शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित न रहकर पृथ्वी के दीर्घकालिक कल्याण और जीवन की गुणवत्ता को भी सुनिश्चित करे। भारतीय दृष्टिकोण इस दिशा में अत्यंत प्रेरणादायी है क्योंकि यहाँ ज्ञान और मूल्य सदैव एक–दूसरे के पूरक रहे हैं।

भारतीय दृष्टिकोण से मूल्य आधारित शिक्षा और पर्यावरणीय चेतना

भारतीय ज्ञान परम्परा सदैव से ही "संपूर्ण जीवन–दर्शन" का वाहक रही है। यहाँ शिक्षा केवल रोजगार पाने का साधन नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला और समाज तथा प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व का प्रशिक्षण है। भारतीय दृष्टिकोण में शिक्षा का उद्देश्य "सा विद्या या विमुक्तये" – अर्थात् वह विद्या है जो बंधनों से मुक्ति दिलाए। यह मुक्ति केवल मानसिक या आध्यात्मिक नहीं, बल्कि भौतिक लालसाओं, असंयम और पर्यावरण विनाश से भी मुक्ति है।

आज जब दुनिया "सतत विकास" की चर्चा कर रही है, तब भारतीय परम्परा इसे हजारों वर्ष पूर्व ही जीवन का हिस्सा बना चुकी थी। मूल्य आधारित शिक्षा भारतीय परम्परा में ही निहित है, जो व्यक्ति को आत्मसंयम, संतुलन और प्रकृति के प्रति श्रद्धा सिखाती है।

1. वेदों में पर्यावरणीय मूल्य

ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद में प्रकृति के प्रति गहन श्रद्धा के भाव व्यक्त किए गए हैं। वेदों में सूर्य, वायु, जल, अग्नि और पृथ्वी को देवता कहा गया है। यह दृष्टिकोण केवल धार्मिक नहीं है, बल्कि यह संकेत करता है कि मानव जीवन इन तत्वों पर आधारित है और इनका संरक्षण करना ही धर्म है।

ऋग्वेद का मंत्र –"माता भूमिरू पुत्रोऽहम् पृथिव्या।"अर्थात्, "पृथ्वी मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ।" यह पंक्ति मानव और प्रकृति के बीच गहरे पारिवारिक संबंध की व्याख्या करती है। यदि हम पृथ्वी को माता मानें तो उसके संसाधनों का दोहन नहीं, बल्कि संरक्षण करेंगे। यही सतत विकास का वास्तविक मूल्य है। यजुर्वेद में जल संरक्षण का उल्लेख मिलता है। जल को जीवन का आधार माना गया है। यही शिक्षा आज जलवायु परिवर्तन और जल संकट की समस्याओं का समाधान देती है।

2. उपनिषदों में संतुलन और आत्मसंयम

उपनिषद भारतीय दर्शन का गूढ़तम स्वरूप हैं। इनमें यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि समस्त जगत में एक ही ब्रह्म की सत्ता है। इसका अर्थ है कि मानव और प्रकृति अलग नहीं, बल्कि एक ही चेतना के अंश हैं। यदि हम प्रकृति का शोषण करेंगे तो उसका प्रतिफल हमें ही भुगतना पड़ेगा। ईशोपनिषद में कहा गया है– ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत अर्थात यह समस्त जगत ईश्वर से व्यापित है। इसलिए किसी भी वस्तु का दुरुपयोग मत करो, केवल आवश्यकता के अनुसार ही उसका प्रयोग करो। यह शिक्षा मूल्य आधारित शिक्षा का मूल है। यह उपभोक्तावाद को नकारती है और संयम, संतुलन तथा संतोष पर बल देती है।

3. गीता में कर्तव्य और निष्काम भाव

भगवद्गीता में कर्मयोग का संदेश है। गीता कहती है कि मनुष्य को केवल अपने लाभ के लिए नहीं, बल्कि लोककल्याण के लिए कर्म करना चाहिए। "परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम" यह श्लोक स्पष्ट करता है कि नेतृत्व और कार्य का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत लाभ नहीं होना चाहिए, बल्कि धर्म की रक्षा और समाज के संतुलन की स्थापना होनी चाहिए। यदि हम पर्यावरणीय दृष्टिकोण से देखें तो गीता यह सिखाती है कि मानव को केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि संरक्षक बनना चाहिए। निष्काम भाव से किया गया कर्म ही सतत विकास की गारंटी दे सकता है।

4. जैन और बौद्ध परम्परा में अहिंसा और करुणा

जैन दर्शन का मूल है – अहिंसा परमो धर्मः।

यह अहिंसा केवल प्राणियों तक सीमित नहीं है, बल्कि वनस्पति और पर्यावरण तक विस्तारित है। जैन मुनि एक पत्ता भी तोड़ने से पहले सोचते हैं क्योंकि उसमें भी जीवन का अंश है। यह दृष्टिकोण पर्यावरण संरक्षण के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

बौद्ध धर्म में करुणा और मध्यम मार्ग की शिक्षा दी गई है। बुद्ध ने कहा कि जीवन में अति वर्जित है। यह विचार आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कृति के लिए बड़ी शिक्षा है। यदि मानव अपनी इच्छाओं को संयमित करे तो पर्यावरणीय संकट अपने आप कम हो सकता है।

5. महात्मा गाँधी का पर्यावरण दृष्टिकोण

महात्मा गाँधी का पूरा जीवन सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण का आदर्श है। उन्होंने कहा था–"प्रकृति सबकी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है, लेकिन किसी के लोभ की नहीं।"गाँधी जी का "ट्रस्टीशिप सिद्धांत" यह सिखाता है कि जो भी संसाधन हमारे पास हैं वे केवल हमारे नहीं, बल्कि समाज और आने वाली पीढ़ियों के भी हैं। इसलिए हमें उनका उपयोग ट्रस्टी की तरह करना चाहिए। गाँधी जी की शिक्षा यह बताती है कि विकास तभी सतत है जब उसमें अहिंसा, सत्य और संयम के मूल्य हों। आज जब आधुनिक उद्योग और विज्ञान पर्यावरणीय असंतुलन का कारण बन रहे हैं, तब गाँधी का यह संदेश और भी प्रासंगिक हो गया है।

आधुनिक समय में मूल्य आधारित शिक्षा की प्रासंगिकता

आज के वैश्विक परिदृश्य में पर्यावरण संकट दिन–प्रतिदिन गहराता जा रहा है। जलवायु परिवर्तन, ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन, जल एवं वायु प्रदूषण, प्लास्टिक कचरे का बढ़ना और प्राकृतिक आपदाओं की तीव्रता इसका प्रमाण हैं। इन समस्याओं का समाधान केवल तकनीकी उपायों से संभव नहीं है। इसके लिए आवश्यक है कि व्यक्ति की चेतना और जीवन दृष्टि में परिवर्तन आए। यही कार्य मूल्य आधारित शिक्षा कर सकती है।

नई शिक्षा नीति 2020 ने भी यह माना है कि शिक्षा केवल कौशल और रोजगार तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह विद्यार्थियों में जिम्मेदारी, सहानुभूति, सामाजिक संवेदनशीलता और पर्यावरणीय चेतना का विकास करे। इसीलिए शिक्षा के हर स्तर पर पर्यावरण और सतत विकास से जुड़े मूल्यों को जोड़ने की आवश्यकता है।

मूल्य आधारित शिक्षा से होने वाले लाभ

1. पर्यावरणीय चेतना का विकास – विद्यार्थी यह समझते हैं कि पृथ्वी सीमित संसाधनों वाली है। इसलिए उनका संरक्षण आवश्यक है।

2. संतुलित जीवन शैली – उपभोगवाद और विलासिता की अंधी दौड़ से बचकर संयमित जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है।

3. सामाजिक उत्तरदायित्व – शिक्षा व्यक्ति को केवल स्वयं तक सीमित नहीं रखती, बल्कि समाज और प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी की भावना जगाती है।

4. सतत विकास का आधार – जब शिक्षा मूल्यपरक होगी तभी विकास शोषण–आधारित न होकर संरक्षण–आधारित होगा।

5. सांस्कृतिक जुड़ाव – भारतीय परम्परा और दर्शन से जुड़े मूल्य विद्यार्थियों को अपनी जड़ों से जोड़ते हैं।

वर्तमान चुनौतियाँ

1. उपभोक्तावादी संस्कृति – आज का समाज भोगवादी दृष्टिकोण से प्रेरित है, जिससे प्रकृति का शोषण बढ़ रहा है।

2. शिक्षा का बाजारीकरण – शिक्षा संस्थान रोजगारपरक विषयों पर अधिक बल देते हैं, मूल्य आधारित शिक्षा को गौण कर देते हैं।

3. नीतिगत असमानताएँ – शिक्षा नीतियों में मूल्य शिक्षा को सैद्धांतिक रूप से तो मान्यता मिलती है परन्तु व्यवहारिक स्तर पर इसका अभाव है।

4. युवाओं में व्यावहारिक कठिनाइयाँ – आधुनिक जीवन शैली, सोशल मीडिया और त्वरित संतुष्टि की प्रवृत्ति मूल्यों के अनुपालन में बाधक है।

5. प्राकृतिक संसाधनों पर वैश्विक दबाव – विकासशील देशों में गरीबी और आवश्यकताओं की अधिकता के कारण पर्यावरणीय मूल्य पीछे छूट जाते हैं।

नीतिगत सुझाव

1. पाठ्यक्रम में समावेशन – प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक पर्यावरण और मूल्य शिक्षा को अनिवार्य पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाए।

2. व्यवहारिक शिक्षा – केवल किताबों तक सीमित न रहकर वृक्षारोपण, जल संरक्षण परियोजनाएँ, स्वच्छता अभियान और प्रकृति से जुड़े कार्य विद्यार्थियों से कराए जाएँ।

3. शिक्षक प्रशिक्षण – शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाए ताकि वे मूल्यों को केवल पढ़ाएँ नहीं, बल्कि स्वयं आचरण में भी उतारें।

4. भारतीय ज्ञान परम्परा का उपयोग – वेद, उपनिषद, गीता, जैन–बौद्ध दर्शन और गाँधी विचारों से शिक्षा को जोड़ा जाए।

5. प्रौद्योगिकी का सदुपयोग – डिजिटल शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को पर्यावरणीय चेतना और सतत विकास से जोड़ा जाए।

6. समुदाय की भागीदारी – विद्यालय और महाविद्यालय स्थानीय समुदाय के साथ मिलकर पर्यावरणीय योजनाएँ लागू करें।

7. अनुसंधान को बढ़ावा – विश्वविद्यालयों में "मूल्य आधारित शिक्षा और सतत विकास" पर शोध को प्रोत्साहित किया जाए।

निष्कर्ष

पर्यावरण संकट केवल तकनीकी समस्या नहीं है, यह एक नैतिक और मूल्यगत समस्या भी है। जब तक मानव की सोच और जीवनशैली में परिवर्तन नहीं होगा, तब तक सतत विकास का सपना अधूरा रहेगा। भारतीय परम्परा ने हजारों वर्ष पूर्व यह शिक्षा दी कि पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं। इसी भावना को आधुनिक शिक्षा में समाहित करना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। मूल्य आधारित शिक्षा न केवल ज्ञान और कौशल देती है, बल्कि व्यक्ति को जीवन जीने की सही दिशा भी दिखाती है। यह शिक्षा व्यक्ति को प्रकृति और समाज दोनों के प्रति उत्तरदायी बनाती है। यदि शिक्षा प्रणाली में मूल्य और पर्यावरणीय चेतना को प्रमुखता दी जाए तो भविष्य की पीढ़ियाँ अधिक संवेदनशील, संतुलित और टिकाऊ विकास की वाहक बनेंगी। इस प्रकार, "पर्यावरण और सतत विकास के लिए मूल्य आधारित शिक्षा" केवल एक शैक्षणिक विषय नहीं, बल्कि मानवता के अस्तित्व की अनिवार्य शर्त है।

संदर्भ

1. शर्मा, आर. (2020). भारतीय शिक्षा और पर्यावरणीय मूल्य. नई दिल्ली राष्ट्रीय शैक्षिक प्रकाशन।

2. मिश्रा, एस. (2021). सतत विकास और शिक्षा की भूमिका. वाराणसी गंगाजल प्रकाशन।

3. आचार्य, वी. (2021). भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक शिक्षा. जयपुर संस्कार बुक्स।

4. गुप्ता, ए. (2022). पर्यावरण संकट और मूल्य शिक्षा. लखनऊ भारतीय साहित्य भवन।

5. पांडेय, आर. (2022). नई शिक्षा नीति और पर्यावरणीय चेतना. भोपाल नवा भारत प्रकाशन।

6. कुमारी, पी. (2023). मूल्य आधारित शिक्षा का वैश्विक परिप्रेक्ष्य. पटना शिक्षावाणी प्रकाशन।

7. जोशी, डी. (2023). भारतीय परम्परा और सतत विकास. दिल्ली संस्कार पब्लिशर्स।

8. तिवारी, एन. (2024). गाँधी विचार और पर्यावरण. इलाहाबाद साहित्य भारती।

9. वर्मा, के. (2024). शिक्षा में नैतिकता और सतत विकास. कानपुर ज्ञानदीप प्रकाशन।

10. सिंह, एम. (2025). एजुकेशन फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंटरू भारतीय दृष्टिकोण. दिल्ली नेशनल बुक ट्रस्ट।